[This question paper contains 03 printed pages]

Roll Number: _______________

HPAS (Main) Examination-2018

Sanskrit-I

Time: 3 Hours | Maximum Marks: 100

निर्धारित समय : तीन घंटे | अधिकतम अंक: 100

Note:- Question Nos.1-3 may be answered either in Sanskrit or in the medium of examination opted by the candidate.

सूचना:- 1-3 प्रश्नाः संस्कृतमाध्यमेन अथवा अभ्यर्थिना परीक्षार्थं स्वीकृतेन माध्यमेन उत्तरितुं शक्याः।

---

1 (a) Disjoin the following *padas* quoting relevant Sutras : (10)

अधस्तनेषु पदेषु सूत्रोल्लेखपूर्वकं सन्धिविच्छेदः क्रियताम् :

विष्णवे, गव्यम्, जगदीशः, हरी रम्यः

(b) Indicate the case-ending in the following underlined words: (10)

अधः प्रदत्तेषु रेखाङ्कितेषु सूतोल्लेखपुरस्सरं विभक्तिनिर्देशो विधीयताम् :

हरिः <u>वैकुण्ठम्</u> अधिवसति, रामेण <u>बाणेन</u> हतो बाली, <u>ग्रामाद्</u> आगच्छति, <u>छात्रेषु</u> मैत्रः पटुः

OR

अथवा

(a) Indicating the name of compound in the following words explain their dissolution : (10)

अधः प्रदत्तेषु पदेषु समासनाम उल्लिख्य तत्र विग्रहः प्रदर्श्यताम् :

निर्मक्षिकम्, चोरभयम्, पीताम्बरः, पाणिपादम्

(b) Change the following sentences into active or passive voice as applicable : (10)

अधोलिखितवाक्यानां यथायोग्यं कर्मवाच्येऽथवा कर्तृवाच्ये परिवर्तनं क्रियताम् :

राजा विप्राय गां ददाति,

रेवत्या गङ्गाजलं पीयते,

गुरुः छात्रान् उपदिशति,
बालकेन पत्रं लिख्यते।

2. Describe the main features of similarities and dissimilarities between the Vedic and Classical Sanskrit language: (20)
वैदिक-लौकिकसंस्कृतयोः भाषागतं प्रमुखं साम्यं वैषम्यं च विविच्यताम्।

OR
अथवा

Describe the characteristics of Mahakavya with the citations.
महाकाव्यस्य लक्षणं सोदाहरणं विविच्यताम्।

3. Describe the importance of 'Upanayana' among all the Sanskaras: (20)
संस्कारेषु 'उपनयन' संस्कारस्य महत्त्वं वर्ण्यताम्।

OR
अथवा

Describe briefly the principles of Advaitavedanta philosophy. (20)
दर्शनेषु अद्वैतवेदान्तस्य सिद्धान्ताः संक्षेपेण प्रतिपाद्यन्ताम्।

4. Translate the following passage into Sanskrit: (20)
अधोलिखितगद्यांशस्य संस्कृतानुवादो विधीयताम्:

विशुद्ध मन ही मुक्ति का कारण बनता है। मन से ही बन्धन है, मन से ही मुक्ति है। मन को विशुद्ध करने वाले उपाय अनेक हैं। उनमें अच्छी बातों को सुनना एवं उनका मनन करना एक है। अच्छी बात वह है जो हमें सभी के साथ चलने एवं सभी का सुख सोचने की प्रेरणा देती है। अच्छी बात का रस भी वही है। जहाँ रस है वहाँ आनन्द है। इस रस के आस्वादन से मन आनन्दित रहता है और विशुद्ध भी होता है।

OR
अथवा

Bramacharya means control of the senses in thought, word and deed. There is no limit to the possibilities of renunciation, even as there is none to those of *brahmacharya*. Such *brahmacharya* is impossible of attainment by limited effort. For many it must remain only as an ideal. An aspirant after *brahmacharya* will always be conscious of his shortcomings, will seek out the

passions lingering in the innermost recesses of his heart and will incessantly strive to get rid of them. So long as thought is not under complete control of the will, *brahmacharya* in its fullness is absent.

5. Write a short essay in your own Sanskrit on the following topic: (20)

अधोलिखितेषु कमप्येकं विषयम् अवलम्ब्य स्वसंस्कृतभाषया अनतिदीर्घः एकः निबन्धो लिख्यताम्:

राष्ट्रनिर्माणे युवशक्तेः महत्त्वम्

OR

अथवा

सर्वोपकारकं संस्कृतम्